

नासा और इसरो का एक नया संयुक्त प्रयास



हाल ही में नासा और इसरो ने मिलकर सूर्य की समकालिक (सिन्क्रॉनॉमस) कक्षा में उपग्रह स्थापित किया है। यह प्रक्षेपण दोनों के एक दशक लंबे द्विपक्षीय प्रयास का परिणाम रहा है।

कुछ बिंदु -

- मिशन जीएसएलवी - एफ 16 माध्यम से नासा इसरो सिंथेटिक अपर्चर रडार (निसार) को सूर्य की कक्षा में भेजा गया है।
- 2.8 टन वजनी निसार एक वेद्यशाला है, जो केवल कुछ सेंटीमीटर माप वाले सतही परिवर्तनों का पता लगाने में सक्षम है। यह भूमि की विरूपता, ग्लेशियर प्रवाह, जैवभार (बायोमास), भूमि के उपयोग में परिवर्तन और समुद्री बर्फ की गतिशीलता पर डेटा दे सकेगा।
- इसका डेटा आपदा जोखिम को कम करने और आईपीसीसी मॉडल को रिफाइन करने के लिए सेंडाई फ्रेमवर्क का समर्थन करने में मदद कर सकता है।
- कूटनीतिक दृष्टिकोण से यह प्रक्षेपण इस बात का प्रमाण है कि भारत पर हाई-वेल्थू हार्डवेयर और जटिल एकीकरण कार्यक्रमों के लिए भरोसा किया जा सकता है। हालांकि, भारत अभी भी संयुक्त मिशनों को समान शर्तों पर आकार देना सीख रहा है।

- इस मिशन में कुछ फ्लाइट सॉफ्टवेयर आयात किए गए थे। मुख्य डिजाइन रिव्यू नासा के नेतृत्व में किए गए थे। समान शर्तों पर काम करने के लिए भारत को उन्नत सामग्री, गहन अंतरिक्ष संचार और सिस्टम इंजीनियरिंग में बड़े घरेलू निवेश करना होगा। भविष्य के बहुपक्षीय मिशनों के वैज्ञानिक एजेंडे को तैयार करने में भारत की पहले से भागीदारी की आवश्यकता होगी।

‘द हिंदू’ में प्रकाशित संपादकीय पर आधारित। 01 अगस्त 2025

